# कोलवी की बौद्ध गुफाओं का ऐतिहासिक महत्व व वर्तमान परिदृश्य

Present scenario and Importance of historical Kolvi's Buddhist Caves

**बौद्ध अध्ययन में एम॰फिल॰ की उपाधि हेतु**

**प्रस्तुत लघु शोधप्रबंध**


**शोधार्थी**

**गोविन्द कुमार मीना**

**पंजीयन स. 2015/03/213/001**

**शोध निर्देशक**

**डॉ. सुरजीत कुमार सिंह**

**केन्द्र निदेशक**

**डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र**

**संस्कृति विद्यापीठ**

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय**

वर्धा


**सत्र 2015-16**

# प्रस्तावना

भारत देश में कला एवं संस्कृति का जितना विकास देखने को मिलता है वह अपने आप में बहुत गौरव की बात है। युग-युगों में भारतीय मानव के क्रिया कलापों का पर्यवेक्षण अतिविस्तृत एवं विविधतापूर्ण है। ललित कलाओं के बहुमुखी माध्यम के अन्तर्गत अनेक स्तरों पर मनुष्यों ने अपने मननशील व्यक्तित्व का अनुभव हाथों के रचनात्मक सामर्थ्य के अनुरूप अभिव्यक्त किया है। भारतीय शिल्प एवं स्थापत्य की सामग्री विशाल भौगोलिक क्षेत्र और काल-विस्तार में बिखरी हुई प्राप्त होती है। देश तथा काल सम्बन्धी परम्पराओं एवं जातीय साधना के बहुविध स्वरुप एवं लक्ष्य स्वतः अपनी पहचान बनाते हैं, किन्तु उन सभी का मूलभूत अस्तित्व व्यापक भारतीयता से अनुप्राणित होता है। इस दृष्टि से कला का अध्ययन धम्म-सम्प्रदाय, लोक-विश्वास, पूजा-विधि, जनजीवन के सामान्य व्यवहार को प्रतीक के रूप में समझने की दृष्टि से हुआ। भारतीय कला मर्मज्ञों ने हर एक कला को बारीकी से समझकर उसको सूक्षमता से इन शैलचित्रों पर उत्कीर्ण किया। जिससे जनसामान्य को ये कला के प्रतिरूप आज भी प्रेरणा देती है।

भारत में जब इन कलाओं का जन्म हुआ तो कलाकारों का सिर्फ और सिर्फ यह उद्देश्य होता था कि समाज में जो बातें प्रचलन में है उनको किस प्रकार शैलचित्रों पर उत्कीर्ण किया जाएँ। इन मूर्तियों में वे कलाकार भावबोध को भी दर्शाने लगे थे। यह कारीगरी वर्तमान समय में मिले अवशेषों में दिखाई देती है। भारत सांस्कृतिक रूप से सदैव समृद्ध रहा है। किन्तु धीरे-धीरे कला के इन विकसित आयामों को विदेशी एवं तुर्की आक्रान्ताओं के द्वारा लूटकर क्षति पहुंचायी गयी। कला के इन बेजोड़ नमूनों को जिस उद्देश्य के साथ निर्मित किया गया था, उसको छिन्न-भिन्न कर दिया गया। भारत की मुख्यतः बौद्ध स्थापत्य को इन तुर्क लुटेरों के द्वारा सबसे ज्यादा क्षति पहुंचायी गयी। यह क्षति इतने भयंकर रूप से की गयी थी कि सदियों तक ये बौद्ध अवशेष ऐसे ही विस्मृत पड़ें रहें। अंग्रेज अधिकारियों ने इन विस्मृत अवशेषों को सर्वप्रथम जनसामान्य के समक्ष रखा। आज भी निश्चित रूप से इन पुरावशेषों के साथ छेड़-छाड़ की घटनाएँ आम है।

भारत में सिर्फ बौद्ध धम्म ही एक ऐसा धम्म था जिसने ब्राहमणवाद की कुत्सित एवं बर्बर नीतियों के विरुद्ध अपना पहला आन्दोलन अनवरत रूप से प्रारम्भ रखा। बौद्धधम्म ने लोगों को स्वतन्त्र चिन्तन का मौका दिया। बौद्ध धम्म की लोकप्रियता का मुख्य कारण है कि ब्राहमण धम्म के पुराधाओं ने जीवन के सभी क्षेत्रों पर अपने आधिपत्य जमा लिए। लोगों को शिक्षा लेने से बाध्य किया गया। इससे लोग किसी को भी सत्य मान लेते थे। ब्राह्मणों के द्वारा थोपी गयी नीतियों को वे नियति समझ बैठे। बौद्ध धम्म ने इन बातों का खंडन किया। जो अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है।

बौद्ध धम्म ने समाज के हर पहलुओं तथा आयामों को ब्राह्मणों के चंगुल से मुक्त किया। इसी के फलस्वरूप कई तरह की कलाओं का जन्म हुआ। जिससे मूलतः इस बात पर जोर दिया गया कि जनसामान्य सभी प्रकार के विकारों से मुक्त रहें। तथा नियतिवाद को समझकर इस बात से सदैव मुक्त रहें।

राजाओं के सामन्तों ने बौद्ध भिक्षुओं के लिए बौद्ध विहार , चैत्य एवं संघारामों को निर्माण करवाया। इनमें कला मर्मज्ञों ने अपनी समस्त ऊर्जा का उपभोग किया। कोलवी की बौद्ध गुफाएँ अपनी ऐतिहासिकता के कारण प्रसिद्ध है। जो बौद्ध धम्म के राजस्थान में होने का साक्ष्य है।

# शोध सार

भारत देश में कला एवं संस्कृति का जितना विकास देखने को मिलता है वह अपने आप में बहुत गौरव की बात है। युगयुगों में भारतीय मानव के क्रिया कलापों का पर्यवेक्षण अतिविस्तृत एवं विविधतापूर्ण है। ललित - कलाओं के बहुमुखी माध्यम के अन्तर्गत अनेक स्तरों पर मनुष्यों ने अपने मननशील व्यक्तित्व का अनुभव हाथों के रचनात्मक सामर्थ्य के अनुरूप अभिव्यक्त किया है। भारतीय शिल्प एवं स्थापत्य की सामग्री विशाल भौगोलिक क्षेत्र और कालविस्तार में बिखरी हुई प्राप्त होती है। देश तथा काल सम्बन्धी परम्पराओं एवं जातीय साधना के - बहुविध स्वरुप एवं लक्ष्य स्वतः अपनी पहचान बनाते हैंकिन्तु उन सभी का मूलभूत अस्तित्व व्यापक भारतीयता , से अनुप्राणित होता है। इस दृष्टि से कला का अध्ययनधम्मजनजीवन के ,विधि-पूजा ,विश्वास-लोक ,सम्प्रदाय-सामान्य व्यवहार को प्रतीक के रूप में समझने की दृष्टि से हुआ। भारतीय कला मर्मज्ञों ने हर एक कला को बारीकी से समझकर उसको सूक्षमता से इन शैलचित्रों पर उत्कीर्ण किया। जिससे जनसामान्य को ये कला के प्रतिरूप आज भी प्रेरणा देती है।

भारत में जब इन कलाओं का जन्म हुआ तो कलाकारों का सिर्फ और सिर्फ यह उद्देश्य होता था कि समाज में जो बातें प्रचलन में है उनको किस प्रकार शैलचित्रों पर उत्कीर्ण किया जाएँ। इन मूर्तियों में वे कलाकार भावबोध को भी दर्शाने लगे थे। यह कारीगरी वर्तमान समय में मिले अवशेषों में दिखाई देती है। भारत सांस्कृतिक रूप से सदैव समृद्ध रहा है। किन्तु धीरे धीरे कला के इन-विकसित आयामों को विदेशी एवं तुर्की आक्रान्ताओं के द्वारा लूटकर क्षति पहुंचायी गयी। कला के इन बेजोड़ नमूनों को जिस उद्देश्य के साथ निर्मित किया गया था उसको , भिन्न कर दिया गया। भारत की मुख्यतः बौद्ध स्थापत्य को इन तुर्क लुटेरों के द्वारा सबसे ज्यादा क्ष-छिन्नति पहुंचायी गयी। यह क्षति इतने भयंकर रूप से की गयी थी कि सदियों तक ये बौद्ध अवशेष ऐसे ही विस्मृत पड़ें रहें। अंग्रेज अधिकारियों ने इन विस्मृत अवशेषों को सर्वप्रथम जनसामान्य के समक्ष रखा। आज भी निश्चित रूप से इन पुरावशेषों के साथ छेड़ छाड़ की घटनाएँ आम है।-

भारत में सिर्फ बौद्ध धम्म ही एक ऐसा धम्म था जिसने ब्राहमणवाद की कुत्सित एवं बर्बर नीतियों के विरुद्ध अपना पहला आन्दोलन अनवरत रूप से प्रारम्भ रखा। बौद्धधम्म ने लोगों को स्वतन्त्र चिन्तन का मौका दिया। बौद्ध धम्म की लोकप्रियता का मुख्य कारण है कि ब्राहमण धम्म के पुराधाओं ने जीवन के सभी क्षेत्रों पर अपने आधिपत्य जमा लिए। लोगों को शिक्षा लेने से बाध्य किया गया। इससे लोग किसी को भी सत्य मान लेते थे। ब्राह्मणों के द्वारा थोपी गयी नीतियों को वे नियति समझ बैठे। बौद्ध धम्म ने इन बातों का खंडन किया। जो अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है।

बौद्धधम्म ने समाज के हर पहलुओं तथा आयामों को ब्राह्मणों के चंगुल से मुक्त किया। इसी के फलस्वरूप कई तरह की कलाओं का जन्म हुआ। जिससे मूलतः इस बात पर जोर दिया गया कि जनसामान्य सभी प्रकार के विकारों से मुक्त रहें। तथा नियतिवाद को समझकर इस बात से सदैव मुक्त रहें।

चैत्य एवं संघारामों को निर्माण करवाया। इनमें ,राजाओं के सामन्तों ने बौद्ध भिक्षुओं के लिए बौद्ध विहार कला मर्मज्ञों ने अपनी समस्त ऊर्जा का उपभोग किया। कोलवी की बौद्ध गुफाएँ अपनी ऐतिहासिकता के कारण प्रसिद्ध है। जो बौद्धधम्म के राजस्थान में होने का साक्ष्य है।

वैदिक धर्म की कुरूतियों के विरुद्ध बौद्ध धर्म का अभ्युदय हुआ। बौद्ध धर्म ने बहुजनों के कल्याण के लिए संघ के द्वार खोल दिए, इससे धर्म में बड़ी मात्रा में लोग प्रवजित हुए। लोगों के कल्याण एवं धर्म के प्रचार के लिए धनाडय श्रेष्ठियों ने प्रचुर मात्रा में दान दिया। धीरे-धीरे समाज में कला का जन्म हुआ, जिसमें सम्बन्धित शिक्षाओं को शैलों पर उत्कीर्ण किया जाने लगा। इस तरह से शिक्षाओं को स्थायित्व मिला। दूसरी ओर बौद्ध भिक्षुओं के लिए गुफाओं में विहार , चैत्यों तथा स्तूपों का निर्माण करवाया जाने लगा। बौद्ध भिक्षु सांसारिक मोह-माया से मुक्त होकर इन गुफा-कन्दराओं में अपनी साधना को बिना किसी बाधा के पूर्ण करते थे। इस तरह की गुफाओं के निर्माण का सबसे पहला उदाहरण सम्राट अशोक के समय का मिलता है जिसमें आजीविकों के लिए बराबर की पहाड़ियों में गुफाएँ निर्माण करवायी गयी। बाद के कालखंडों में अजन्ता एवं एल्लोरा के उदाहरण प्रमुख है।

राजस्थान में बौद्ध धर्म के प्रवेश सम्राट अशोक के समय से माना जाता है। उसी के पश्चात किन्तु थोड़े धीमे स्तर पर धर्म का प्रसार हुआ। पांचवी ईसा में मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित लैटेराइट पहाड़ियों में आवास एवं पूजा के लिए पहाड़ियों का निर्माण करवाया गया। यह कार्य गुप्तों के अधीन सामन्तों के द्वारा पूर्ण करवाया गया। यह गुफा विहार निर्मिती के पश्चात आज भी इनकी विशेष बनावट एवं कारीगरी के कारण मन-मोह लेती हैं।

इतिहास के पन्नों में राजस्थान की इन बौद्ध गुफाओं को जो स्थान मिलना चाहिए था वह अब तक नहीं मिला है। इनको मुख्य सर्किट से जोड़कर इस स्थान को पर्यटन के विभिन्न आयामों से जोड़कर विकसित किया जाना चाहिए। पर्यटन क्षेत्र से जोड़ने से स्थानीय निवासियों की रोजगार की समस्या बहुत हद तक दूर की जा सकेगी। सरकार के द्वारा पर्यटन विकसित करने के प्रयासों की दरकार को तरसता यह स्थान है।